



signed a 'federation toilet block' and, what's more, developed community management strategies to ensure toilets were kept clean.

Neither the State, nor the poor, nor the private sector could effect a solution on its own. Communities therefore offered a simple partnership process to the city: the city bears the capital cost of construction while the communities design, construct, manage and maintain the toilets.

The Alliance's first demo project (at Chikhalwadi, Mumbai in 1998) was followed by an invitation from Pune to explore providing minimum sanitation for the city's slum dwellers. Mumbai followed suit. And today, the Alliance's 'Zero Open Defecation Campaign' has marched beyond to cities in Andhra, Gujarat, Orissa, Pondicherry and TamilNadu.

खुले में शून्य मल की ओर

गरीबों के समुदाय स्वच्छता चाहते हैं न केवल अपनी सफाई और सेहत के लिये पर इसलिये भी की वे अकेले में बिना शर्मिंदगी महसूस किये शौच के लिये जा सकें।

स्पार्क, एन.एस.डी. एफ. और महिला मिलन के गठबंधन के लिये न्यूनतम सार्वभौम स्वच्छता की कटि बद्धता बहुत पहले, 1986 में ही शुरू हो गयी थी। भायखला की फुटपाथ बस्तियों की महिलाओं ने बताया था की सब से बड़ी शर्मिंदगी होती है खुले में शौच जाते समय मूंह ढक कर बैठने में। महिलाओं ने 'संगठन शौचालय' का डिज़ाइन बनाना शुरू किया। उन्होंने सिर्फ डिज़ाइन ही नहीं बनाये बल्कि उन्होंने समुदाय प्रबंध युक्तियां भी विकसित कीं जिनसे

समुदाय शौचालय साफ रखे जा सकें। संकुल में एक बड़े कमरे की जगह रखी गयी जहां सामुदायिक मीटिंगें हो सकें। न तो राज्य, न गरीब, न निजी क्षेत्र, कोई भी इस समस्या का अकेले समाधान नहीं निकाल सका। इसलिये समुदायों ने नगर को सरल भागीदारी का सुझाव दिया – नगर



शौचालयों के निर्माण का मूल खर्चा वहन करे, जबकि समुदाय शौचालय का डिज़ाइन, निर्माण और रखरखाव करेंगे।

गठबंधन की पहली प्रदर्शित परियोजना 1998 में चिक्कलवाड़ी, मुंबई में पूरी हुई— इसके बाद पुणे ने अपनी झोंपड़पट्टी जनसंख्या के लिये न्यूनतम स्वच्छता देने के प्रयास में इन्हें आमंत्रित किया। मुंबई इसके पीछे पीछे आया।

आज गठबंधन का "खुले में शून्य मल अभियान" पुणे और मुंबई से आगे बढ़ कर आंध्र प्रदेश, गुजरात, उड़ीसा, पौडिचेरी और तमिलनाडु के शहरों में पहुंच चुका है।

Mahila Milan decided that their children should not face the humiliation of defecating in the open.

महिला मिलन ने निश्चय किया की उनके बच्चों को खुले में शौच जाने की शर्मिंदगी नहीं उठानी पड़ेगी। शौच जाने की शर्मिंदगी नहीं उठानी पड़ेगी।



A new toilet block at Villipuram is a great attraction for young and old

विल्लीपुरम में नया शौचालय छोटे बड़े सभी के लिये आकर्षण का केन्द्र है।





Tirupur Toilets Mark Turning Point for Alliance



WHEN Sameer Vyas, IAS officer and MD of New Tirupur Area Development Corporation Ltd. (NTADCL), Tamil Nadu, heard of the community sanitation work of the Alliance, he immediately got in touch and visited the sanitation projects in Mumbai and Pune, in April.

Tirupur had already decided that it wanted to work on urban sanitation. Although a successful industrial town, employing thousands in its factories – it accounts for 75% of India's knitwear exports – there is hardly any sanitation in the town slums.

This is where Vyas came into the picture. NTADCL had raised funds from the market to develop infrastructure for Tirupur and given a contract to engineering major L&T for laying sewage lines and building 2000 toilet seats across the city.

L&T however had no experience in constructing toilets in slums. They subcontracted the Alliance to do a survey of slum settlements to assess the need for sanitation facilities and to construct community toilet blocks.

For the Alliance, this was an important opportunity to collaborate with State authorities as also private agencies. It offered to organise communities and train them in construction and management of toilet blocks.

Tirupur marks a very important turning point for the Alliance not only in Tamil Nadu but in the country as a whole. Cities are now recognising that building toilets is not simply a technical construction exercise but rather, that successful community sanitation programmes are upheld by strong and organised communities. Because of its proven ability to mobilise people and build to scale, the Alliance is being approached for assistance with sanitation projects more frequently.

तिरुपुर शौचालय गठबंधन के लिये महत्वपूर्ण मोड़

जब आई.ए.एस. अफसर और न्यू तिरुपुर एरिया डेवलपमेंट कोरपोरेशन लि. (एन.टी.ए.डी.सी.एल.) तामिलनाडु के मुख्य प्रबंधक समीर व्यास ने गठबंधन के सामुदायिक स्वच्छता काम के बारे में सुना, उन्होंने फौरन सम्पर्क किया और अप्रैल में मुंबई और पुणे की शौचालय परियोजनायें देखने आये। तिरुपुर ने पहले से ही सोच रखा था कि वह शहरी स्वच्छता पर काम करेंगे। हालांकि यह एक सफल औद्योगिक शहर है, और यहां की फैक्ट्रियों में हजारों लोग काम करते हैं (यहां से बुने हुए कपड़ों का भारत के निर्यात का 75 प्रतिशत होता है) फिर भी शहर की झोंपड़पट्टियों में मुश्किल से कोई स्वच्छता होगी। यहां व्यास बीच में आये। तिरुपुर में संसाधन विकास करने के लिये एन.टी.ए.डी.सी.एल ने बाजार से पैसे इकट्ठे किये थे और प्रमुख इंजीनियरिंग कम्पनी एल.एन्ड.टी. को शहर में सीवर लाइन डालकर 20000 शौचालय बनाने का ठेका दिया था। एल. एन्ड.टी. को लेकिन झोंपड़पट्टियों में संडास निर्माण का कोई अनुभव नहीं था। इसीलिये उन्होंने गठबंधन को इन झोंपड़पट्टियों में संडास सुविधा की आवश्यकता जांचने के लिये सर्वे करने और समुदाय संडास संकुल बनाने का उप ठेका दिया। गठबंधन के लिये यह राज्य प्राधिकरण और निजी संस्थाओं के साथ भागीदारी करने का एक महत्वपूर्ण अवसर था। उसने समुदायों को संगठित करने और संडास संकुलों का निर्माण और रखरखाव करने के लिये ट्रेनिंग देने का प्रस्ताव दिया। तिरुपुर, गठबंधन के लिये एक बहुत महत्वपूर्ण मोड़ है, न केवल तामिलनाडु में बल्कि पूरे देश में। नगर अब जान रहे हैं कि शौचालय बनाना महज तकनीकी निर्माण ही नहीं है। सफल समुदाय स्वच्छता कार्यक्रमों के पीछे एक मजबूत और संगठित समुदाय होता है। क्यों कि लोगों को चलित करने और निरंतर बढ़ा कर निर्माण करने की गठबंधन की क्षमता मानी हुई है, बारंबार उसे संडास परियोजनाओं में सहायता देने बुलाया जा रहा है।



The Navdisha toilet at Govandi is an example to a city as far away as Tirupur in Tamil Nadu.

गोवंडी स्थित नवदिशा शौचालय तामिलनाडु के तिरुपुर जैसे दूर दराज शहरों के लिये उदाहरण है।



Community leader from the South addresses the Federation on sanitation issues.

दक्षिण की समुदाय नेता ने शौचालय के विषय पर संगठन को संबोधित किया।



First Time Federation

"I HAVE never met people who are so interested and eager to join us," said Padmabhan, a veteran NSDF leader. He had just returned from a very successful visit to Tirupur where he led a team of 25 Federation leaders from Maharashtra, Tamil Nadu, Pondicherry and Karnataka, to assess the level of sanitation in the town's slums.

The team had in-depth discussions with slum dwellers there and shared information on community built and managed toilets as also about the NSDF. Although there is a federation in neighbouring Coimbatore, this is the first time federation activity is being initiated in Tirupur.

Everyone was excited about the Municipality's plan to follow the Alliance's toilet model throughout the city. Working on community toilets – Federation-style – is a transforming experience. For the first time slum dwellers will have access to clean and affordable toilets. This has a very beneficial impact on the entire settlement's (and especially women and children's) health. Working together forges relationships between local leaders and municipal officials. Confidence grows within the community which is then geared to take on more complex issues such as acquiring land and housing.

पहली बार का संगठन

ह मारे साथ काम करने में इतनी रुचि और उत्साह वाले लोग मैंने नहीं देखे," एन.एस.डी.एफ. का सबसे पुराना नेता पद्मनाभन कहता है। वह तिरुपुर की सफल यात्रा से वापस आया था जहां वो शहर की झोंपड़पट्टियों में स्वच्छता का स्तर आंकने महाराष्ट्र, तामिलनाडु, पोंडिचेरी और कर्नाटक के 25 संगठन नेताओं को ले कर गया था। दल ने वहां के झोंपड़पट्टीवासियों के साथ गहराई से बातचीत की और समुदाय निर्मित और प्रबंधित शौचालयों और एन.एस.डी.एफ. के बारे में गहराई से बताया। हालांकि पड़ोसी कोइम्बटूर में तो संगठन है, तिरुपुर में पहली बार संगठन गतिविधियां शुरू हो रही हैं। पूरे शहर में गठबंधन शौचालय मॉडल लागू करने की नगरपालिका की योजना के बारे में सब बहुत उत्साहित थे। संगठन तरीके के समुदाय शौचालय पर काम करना बड़ा परिवर्तनशील अनुभव है। पहली बार झोंपड़पट्टीवासियों को साफ और वाजिब दाम के शौचालय मिलेंगे। इसका पूरी बस्ती (विशेषतया महिलाओं और बच्चों) की सेहत पर बहुत फायदेमंद प्रभाव होता है। साथ ही मिल कर काम करने से स्थानीय नेताओं और नगरपालिका अफसरों के बीच रिश्ते बन जाते हैं। समुदाय में आत्मविश्वास बढ़ता है जो फिर जमीन और आवास जैसे अधिक जटिल मुद्दों पर काम करने को तैयार हो जाता है।



Singareni Toilets Signpost for Hyderabad



WHEN construction started on the two-storey toilet block in Singareni slum on the fringes of the bustling city of Hyderabad, Twin Cities Slum Dwellers Federation coordinator Shankar recalls that at first local residents could not guess what sort of structure was coming up.

Some thought it was an apartment block, others that it was a health centre ...only to learn that the building, in fact, would house toilets.

Singareni is a large settlement of more than 6000 households, of mostly migrants from the tribal interiors of Andhra Pradesh. They work in the mines as well as do wage labour in the city. Singareni is a vibrant settlement, religiously diverse with a mix of Hindu, Muslim and Christian populations.

But there are no toilet facilities for its inhabitants. A graveyard >

सिंगारेनी शौचालय हैदराबादियों के लिये चिन्ह –

ह दराबाद शहर के किनारों पर बसी सिंगारेनी झोंपड़पट्टी में जब दो – मंजिले शौचालय संकुल का निर्माण काम शुरू हुआ तो जुड़वां शहर झोंपड़पट्टीनिवासी संगठन के कार्यकर्ता शंकर याद करते हैं की शुरु में तो स्थानीय लोग समझ ही नहीं पाये की क्या बन रहा है।



Without access to toilets, women are forced to defecate in the open, preferably under the cover of darkness. Often they don't eat or drink anything all day because of the fear of having to go to the toilet. Above, new toilet is a 40 - seat wonder.

शौचालय न होने के कारण महिलाओं को अंधरे की ओट ले कर खुले में शौच के लिये जाना पड़ता है। कई बार वे इस डर से पूरे दिन कुछ खाती पीती नहीं हैं कि शौच के लिये जाना पड़ जायेगा। ऊपर, नया शौचालय 40 सीट का आश्चर्य है।

कुछ ने सोचा की घर बनेंगे, कुछ ने की यह हेल्थ सेंटर है। बाद में पता चला की इमारत में शौचालय बनेंगे। सिंगारेनी एक बड़ी बस्ती है जिसमें 6000 से अधिक परिवार हैं जो अधिकतर आंध्र प्रदेश के आदिवासी हैं। वे खानों में काम करते हैं या शहर में दैनगी मजदूरी के काम करते हैं। सिंगारेनी जीवंत बस्ती है जिसमें हिंदू, मुसलमान और इसाई सभी कॉम मिल जायें गी। लेकिन बस्तीवालों के लिये कोई शौचालय सुविधा नहीं है। बस्ती के पीछे स्थित एक कब्रिस्तान है जो कि एक खुला शौचालय है। >



> at the back of the settlement serves as their open toilet – and for women, many of who are forced to go out in the dark, this a real threat to health and security.

The Alliance is constructing a 40-seater community toilet block here. But this is more than just a toilet block – it is a demonstration to the city of what is possible when poor communities work as partners in providing basic sanitation and housing to its worse-off citizens. What's more, the toilet design serves as model for the Municipal Corporation for future projects.

Mahila Milan leaders Lizbeth Naidu and Meena Ramani from Mumbai, who are both successful community contractors today after their preliminary experience in Mumbai, are undertaking the construction work. It is the first toilet to be built by Mahila Milan community contractors in Hyderabad – pointer to the prospects ahead for community contracting in the country as a whole.

Naidu pointed out that water shortage was a major obstruction to construction. There was only one bore well, used

only for four hours in the morning to conserve the water. Waste water from the kitchen/bathing spaces was led into pits outside the huts, and used for washing and cleaning, besides replenishing the ground water level. The highly saline groundwater could not be used for drinking so residents carried back drinking water from as far as two kms. away.

Mahila Milan, therefore, made it a point to install another bore well specially for toilet construction – which is now being used by slum residents for household purposes.

> और महिलाओं के लिये, जिन्हें अंधेरे में जाना पड़ता है सेहत और सुरक्षा की दृष्टि से खतरा रहता है। अब गठबंधन यहां नियोजित चार में से पहले 40 सीट के समुदाय संकुल का निर्माण कर रहा है, पर यह सिर्फ समुदाय संकुल से कुछ अधिक है। यह नगर के लिये एक प्रदर्शन है कि जब शहर के सबसे असमर्थ नागरिकों को आधारभूत स्वच्छता और आवास दिलाने के लिये गरीब समुदाय शहर के साथ भागीरदारी से काम करते हैं तो क्या कुछ संभव है। और तो और इनका शौचालय का डिजाइन नगरपालिका की भावी परियोजनाओं में मॉडल बन जाता है। मुंबई की महिला मिलन नेता लिजबेथ नायडू और मीना रमानी, जो मुंबई के प्रारंभिक अनुभवों के बाद अब सफल समुदाय ठेकेदार हैं, इसका निर्माण कर रही हैं। हैदराबाद के महिला मिलन समुदाय ठेकेदारों के लिये कितनी संभावनाएं हैं। नायडू ने बताया की पानी की कमी निर्माण के काम में बहुत बड़ी रुकावट है। सिर्फ एक बोरिंग का कुआं था जिसे पानी बचाने के लिये सुबह सिर्फ चार घंटे काम में लेते थे।



Lizbeth Naidu: one of the MM community contractors from Mumbai building toilets in Andhra

लिजबेथ नायडू: मुंबई म.मि. की समुदाय ठेकेदारों में से हैं जो अब आंध्र में शौचालय निर्माण कर रही हैं।

रसोई और नहाने का पानी घरों के बाहर गददों में भर कर उसे धोने या सफाई के काम में लेते हैं। इससे जमीनी पानी का स्तर भी ठीक रहता है। जमीनी पानी बहुत ही खारा था इसीलिये वहां के रहिवासी पीने का पानी 2 कि. मी. की दूरी तक जा कर लाते थे। महिला मिलन ने यह सब जानते हुए शौचालय निर्माण के लिये विशेष रूप से बोरिंग का एक दूसरा कुआं डाला—उसे अब झोंपड़पट्टीवासी घर की जरूरतों के लिये काम में ले रहे हैं।

Pucca Toilets for Pushkaram



VIJAYWADA, on the banks of the Krishna river, is today a major agricultural, trading and business center, a dynamic city of a million residents spread across 57 square kilometres.

But consider that more than 50% of these residents live in informal settlements and slums. A majority of which are perched precariously along the canals and tributaries of the Krishna, without access to basic sanitation and sewerage facilities.

Add, that in August 2004, the city expected lakhs of pilgrims to flow in from all over the country to celebrate the famous Krishna Pushkaram, a festival that occurs once in 12 years – all needing basic amenities. You can imagine the dimensions of the problem facing the municipal authorities there. (*“Officials in a fix over Pushkaram works,”* reported a June edition of *The Hindu*).

The Vijaywada Corporation sought a grant from the A.P. State Government for major developmental works for the Pushkaram. Of this, Rs. 66 lakhs were allocated for water supply and Rs. 62 lakhs for sanitation. >



Celebrating the new toilet नये शौचालय का जश्न।

पुष्करम के लिये पक्के शौचालय

कृष्णा नदी के किनारे बसा विजयवाड़ा आज एक प्रमुख कृषि, वाणिज्य और व्यापार का केंद्र है। यह 57 वर्ग किलोमीटर पर फैला दस लाख लोगों का गतिशील नगर है। पर सोचो की इनमें से 50 प्रतिशत से अधिक लोग अनौपचारिक बस्तियों और झोंपड़पट्टियों में रहते हैं। इनमें से अधिकतर (किसी प्रकार की स्वच्छता या सीवरज की सुविधा के बिना) कृष्णा की नहरों और उपनदियों के किनारे पर बसे हैं।

साथ ही, अगस्त 2004 में नगर को आशा थी की पूरे देश से लाखों लोग तीर्थयात्री प्रसिद्ध कृष्णा पुष्करम् मनाने आयेंगे – यह त्योहार 12 वर्ष में एक बार आता है – और उन्हें सभी प्रकार की सुविधाओं की जरूरत होगी। आप सोच सकते हैं की कितनी बड़ी समस्या नगरपालिका प्राधिकरण के सामने खड़ी थी। (पुष्करम् कामों में अफसर अटके, “दी हिंदू” ने जून में बताया) पुष्करम् के लिये बड़े विकास कार्य करने के लिये विजयवाड़ा नगरपालिका ने आंध्र प्रदेश राज्य सरकार से एक ग्रांट मांगी जिसमें से 66 लाख दिये गये जल आपूर्ति के लिये और 62 लाख स्वच्छता के लिये। >



Beyond Temporary Toilets

> Very often, the expenditure on upgrading sanitation infrastructure for local festivals is grossly wasteful, as typically huge amounts are spent on constructing temporary facilities which get dismantled post-festival.

This year too, temporary toilets were provided by agencies like Sulabh International in Vijaywada – but there was a small and crucial difference in the overall sanitation strategy of the city. It was decided that the Alliance, on its part, would construct permanent community toilet blocks which could be used even after the Pushkaram.

With bid accepted, SSNS, SPARC's Section 25 not-for-profit construction company, geared up to construct 15 toilet blocks at sites designated by the Municipality – and alongside, organise slum communities to maintain and manage these blocks. All this in the extremely short time frame of six months, in readiness for the massive influx of pilgrims.

Community contractors from Mumbai, under the supervision of the AP Federations and assisted by the Alliance, took on the challenge of constructing the toilet blocks. Contractors like Mahboob and Liaqut Ali, who worked with the Alliance on the Mumbai Sewage Disposal Project, and Mahila Milan contractors Lizbeth Naidu and Meena Ramani were co-opted.

Mahboob has learnt to speak Telugu, while Naidu, having spent many months in Andhra, says she now calls herself 'AP ki Naidu' (a joking reference to the erstwhile Chief Minister of the State, Chandrababu Naidu). Ramesh from the Twin Cities Slum Dwellers Federation, along with a team from the AP Feds and Parab from the Mumbai Railway Slum Dwellers Federation, oversaw the construction, and liaised with Vijaywada municipal authorities. Municipal engineers tirelessly supervised construction and engineering procedures.

The toilet blocks include counter-cum caretaker rooms to facilitate fee collection from communities. "Construction is only 10 percent of the job. The success of this model can be judged when communities are involved in maintaining and managing them," said V'wada Corporation Commissioner Usha Rani.

During the Pushkaram festival, the toilets were managed and maintained by caretakers appointed by the AP Feds. Post-Pushkaram, Sulabh International is maintaining the seven toilet blocks at public locations, while eight toilet blocks have been handed over to the care of local slum communities.

Significantly, a brigade of toilet caretakers from Vijaywada began to participate in Federation activities and even attended NSDF's Fifth National Convention in Mumbai.

अस्थायी शौचालयों के आगे

> अधिकतर स्थानीय त्योहारों के समय स्वच्छता संसाधनों के सुधार पर खर्चा बिलकुल व्यर्थ होता है क्यों कि आम तौर पर अस्थायी साधनों के निर्माण में बहुत पैसा खर्च होता है और त्योहार के बाद उन्हें हटा दिया जाता है। इस साल भी विजयवाड़ा में सुलभ इंटरनेशनल जैसी ऐजेंसीयों द्वारा अस्थायी संडास बनाये गये – पर शहर की संपूर्ण स्वच्छता योजना में एक छोटा पर महत्वपूर्ण परिवर्तन था। यह निश्चय किया गया की गठबंधन, अपनी ओर से स्थानीय समुदाय संकुल बनायेगा जो कि पुष्करम् के बाद भी काम लिये जा सकते हैं। यह स्वीकृति मिलने के बाद स्पार्क की सेक्शन 25 गैरलाभकारी कम्पनी एस. एस.एन. एस. ने नगरपालिका द्वारा तय जगहों पर 15 शौचालय बनाने की तैयारी की – इसके साथ ही उन्होंने झोंपड़पट्टी समुदायों को इन संकुलों के रखरखाव और प्रबंध के लिये संगठित किया। ये सब तीर्थयात्रियों की तैयारी सिर्फ 6 महीनों के थोड़े से समय में! आंध्र प्रदेश संगठनों की देख रेख में और गठबंधन की सहायता से, मुंबई के समुदाय ठेकेदारों ने समुदाय संकुलों के निर्माण की चुनौती स्वीकार की। महबूब और लियाकत अली जैसे ठेकेदार जिन्होंने मुंबई सीवरेज डिस्पोजल परियोजना पर गठबंधन के साथ काम किया था और महिला मिलन की ठेकेदार लिजबेथ नायडू और मीना रमानी चुने गये। महबूब ने तेलुगु बोली सीख ली है और नायडू का कहना है कि इतने महीने आंध्र में बिताने के बाद वे अपने आप को ए.पी. की नायडू कहलाती है (राज्य के मुख्यमंत्री चंद्राबाबू नायडू के नाम से)। निर्माण की देखरेख जुड़वां शहर झोंपड़पट्टीवासी संगठन के रमेश और ए.पी. संगठनों के एक दल ने और मुंबई रेल्वे झोंपड़पट्टीवासी संगठन के परब ने की। उन्होंने विजयवाड़ा नगरपालिका प्राधिकरण के साथ भी मध्यस्थता की। नगरपालिका इंजीनियरों ने निर्माण और इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं का अथक निरीक्षण किया। समुदाय संकुलों में काउंटर एवं केयरटेकर का कमरा भी होता है जिससे समुदाय से शुल्क वसूलना सुविधाजनक हो सके। "निर्माण तो काम का सिर्फ 10 प्रतिशत है, इस मॉडल की सफलता का निर्णय तब होता है जब समुदाय इनके रखरखाव और प्रबंध में जुड़े हों", विजयवाड़ा नगरपालिका आयुक्त उषा राणे का कहना है। पुष्करम् त्योहार के समस्त शौचालयों का प्रबंध और रखरखाव ए.पी. की संगठनों द्वारा नियुक्त संचालकों द्वारा किया गया। पुष्करम् के बाद, आम जगहों पर स्थित सात शौचालय संकुलों का प्रबंधन सुलभ इंटरनेशनल कर रहा है, जब कि आठ शौचालय संकुल स्थानीय झोंपड़पट्टी समुदायों को दे दिये गये हैं। महत्वपूर्ण है कि विजयवाड़ा से शौचालय रखरखाववालों का एक बड़ा दल संगठन गतिविधियों में भाग लेने लगा है और मुंबई में एन.एस.डी.एफ. के पांचवे राष्ट्रीय आधिवेशन में भी आया था।



समुदाय संकुलों में काउंटर एवं केयरटेकर का कमरा भी होता है जिससे समुदाय से शुल्क वसूलना सुविधाजनक हो सके। "निर्माण तो काम का सिर्फ 10 प्रतिशत है, इस मॉडल की सफलता का निर्णय तब होता है जब समुदाय इनके रखरखाव और प्रबंध में जुड़े हों", विजयवाड़ा नगरपालिका आयुक्त उषा राणे का कहना है। पुष्करम् त्योहार के समस्त शौचालयों का प्रबंध और रखरखाव ए.पी. की संगठनों द्वारा नियुक्त संचालकों द्वारा किया गया। पुष्करम् के बाद, आम जगहों पर स्थित सात शौचालय संकुलों का प्रबंधन सुलभ इंटरनेशनल कर रहा है, जब कि आठ शौचालय संकुल स्थानीय झोंपड़पट्टी समुदायों को दे दिये गये हैं। महत्वपूर्ण है कि विजयवाड़ा से शौचालय रखरखाववालों का एक बड़ा दल संगठन गतिविधियों में भाग लेने लगा है और मुंबई में एन.एस.डी.एफ. के पांचवे राष्ट्रीय आधिवेशन में भी आया था।



Overcoming Obstacles – MM Style



PUNE has been in the vanguard of the Alliance's toilet construction program. Its construction wing, SSNS (the only non-profit agency involved) was awarded the tender for construction of 23 toilet blocks on the basis of the lowest bid offered.

The participation of Mahila Milan members (who are subcontracted by SSNS) as equal players in construction represents a major achievement for community contracting.

Not that the road was easy for the MM. For instance, members faced construction delays because they did not >

संडास निर्माण मे आड़े आये गैर निर्माण मुद्दे

पुणे, गठबंधन के संडास निर्माण कार्यक्रम में सब से आगे रहा है। एस.एस.एन.एस. (निर्माण में लगी एकमात्र गैरलाभकारी संस्था) को 23 संडास निर्मित करने का ठेका दिया गया क्यों कि उनका टेंडर बिड़ सब से कम था। निर्माण में महिला मिलन सदस्यों की बराबरी के दर्जे पर भागीदारी (जो एस.एस.एन.एस. से उप-ठेके पर हैं) समुदाय ठेकेदारी के लिये बहुत बड़ी उपलब्धि है। ऐसा नहीं है की महिला मिलन के लिये रास्ता सरल था। >

Gavipuram Guttahalli is Model for B'lore



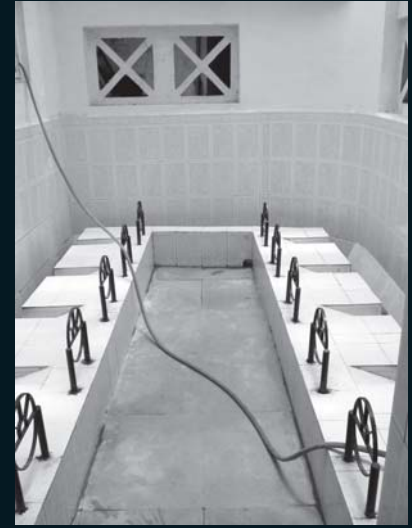
GAVIPURAM GUTTAHALLI (a mouthful to say but a name to remember!)

was the chosen site for a federation-style toilet block that will hopefully become a model for the entire city of Bangalore.

Over 400 families live in this settlement and the old community toilet had fallen to disrepair and disuse without proper management and cleaning systems. Now a brand new two-storeyed toilet block with a circular stairway stands in its place.

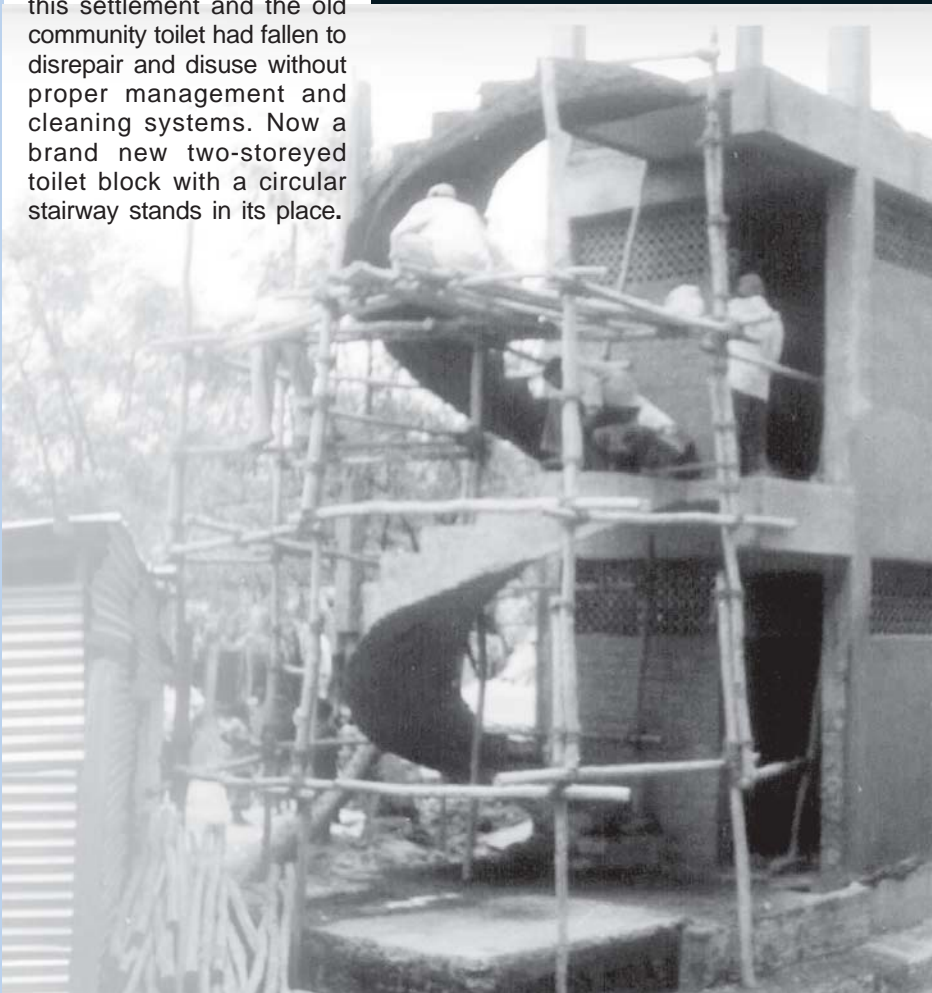
गावीपूरम गुट्टहल्ली बैंगलोर के लिये मॉडल

गावीपूरम-गुट्टहल्ली (बोलने में लम्बा पर याद रखने लायक नाम है) चुना गया संगठन के तरीके का शौचालय संकुल बनाने के लिये, और आशा है कि यह पूरे बैंगलोर शहर के लिये मॉडल बन जायेगा। इस बस्ती में 400 से अधिक परिवार रहते हैं और पुराना शौचालय ढंग से रखरखाव व सफाई न होने के कारण खराब और बेकार हो गया है। अब उस की जगह एक बिलकुल नया दो मंजिला, गोल सीढ़ी वाला संडास संकुल खड़ा है।



TOILET BLOCKS FOR SHILLONG: Inspired by the community toilet design, a team from the Gangtok Water & Sanitation Project is supporting the building of similar blocks in Shillong. Team-members were introduced to the design at the Universal Sanitation workshop organised by the Alliance in March '04. On a later visit to Mumbai and Pune to understand the Alliance's work better, the Gangtok team was specially impressed by the children's toilet mould.

शिलोंग के लिये शौचालय संकुल : समुदाय डिजाइन से प्रेरित, गंगटोक जल एवं स्वच्छता परियोजना इसी तरह के शौचालय संकुल शिलोंग में बनाने का समर्थन कर रही है। गठबंधन द्वारा मार्च '04 में की गयी सार्वभौम स्वच्छता कार्यशाला में दल के सदस्यों का इस डिजाइन से परिचय हुआ। बाद में गठबंधन के काम को समझने के लिये की गयी मुंबई और पुणे की यात्रा में, गंगटोक के दल को बच्चों का शौचालय विशेष रूप से पसंद आया।





> follow the private contractors' practice of bribing municipal workers to take away sludge resulting from demolition of old toilets.

The MM ladies, of course, met this challenge in their own inimitable way. Narrates Jyothi Bhende, "The other day, I was in an auto returning from Hadapsar (site of a relocation project) when I saw a municipal van pass by. I immediately asked the auto driver to follow. I wanted to know where the van was going, because no one had come to our construction site for almost a week. The sludge had accumulated and the local residents were beginning to get anxious. I made the driver pull the auto up in front of the van and asked the driver why he had been avoiding our sites. He hemmed and hawed till over a cup of tea I stressed how important it was for him to take the sludge away because of the ill effects it could have on the residents' health... The very next day, we were all very happy to see the van arrive and take away truckloads of the stuff!"

> उदाहरणस्वरूप महिला मिलन वालों को निर्माण में देरी का सामना करना पड़ा क्यों कि उन्होंने पुराने संडास तोड़ने के बाद कीचड़ हटाने के लिये निजी ठेकेदारों के जैसे नगरपालिका कर्मचारियों को रिश्वत नहीं दी थी। महिला मिलन की महिलाओं ने इस चुनौती का सामना अपने ही तरीके से किया। ज्योती भेंडे बताती हैं 'उस दिन मैं हड़पसर से वापस आते हुए ऑटो में थी की मैंने नगरपालिका की गाड़ी को जाते देखा। मैंने फौरन ऑटोरिक्षावाले को उनका पीछा करने को कहा। मैं देखना चाह रही थी की गाड़ी कहां जा रही है, क्योंकि हमारी निर्माण साइट पर एक हफ्ते से कोई नहीं आया था। कीचड़ इकट्ठी हो रही थी और स्थानीय रहीवासी जरा चिन्तित हो रहे थे। मैंने गाड़ी के सामने अपना ऑटो खड़ा करवाया और उसके ड्राइवर से पूछा की वो हमारी साइट पर क्यों नहीं आ रहा है। वो हां-हूं करता रहा। फिर मैंने उसे चाय पिलायी और बताया की कीचड़ ले जाना कितना जरूरी था नहीं तो वहां रहने वाले सब बीमार पड़ जायेंगे ... अगले ही दिन हम सब खुश हो गये जब गाड़ी आयी और ट्रक भरकर कीचड़ ले गयी।'

The Case of the Unbuilt Toilet

SANITATION, for the Alliance, is not just about constructing toilets. It is also about creating transparency, surmounting red tape and fighting corruption, and ultimately, about changing the power relationship between the poor and the city.

Here's another illustrative case from the 'Politics of Shit' file. SPARC received a legal notice accusing it of delaying and obstructing construction of a toilet block in North Mumbai. This was startling to say the least – since despite local political opposition and threats, SPARC had been doing its best to complete the job. There had been a temporary pause in construction work, true, but that was because on two different occasions, local police officials hauled away SPARC appointed labourers from the site and in one case, even the toilet contractor. That too, without giving cause.

The truth then emerged that a local politician wanted to build toilet blocks in 'his' slum with the help of MP funds – while the Alliance's community-style toilets are directly opposed to this patronage style delivery of toilet blocks. SPARC filed a reply in the Mumbai High Court, and later contacted the Mumbai Police Commissioner when labourers were again locked up on baseless charges.

Balancing different interests must be tough on the Municipality as well. Ultimately, the Municipality withdrew permission to build a toilet in the slum. Such are the twists and turns that take place in the ongoing saga of community toilet construction...



Toilets in slums often become highly contested political spaces.

झोंपड़पट्टियों के शौचालय अधिकतर काफी राजनीतिक झगड़े वाली जगह हो जाते हैं।

संडास जो बन न सका

गठबंधन के लिये स्वच्छता सिर्फ शौचालय बनाना ही नहीं है। यह पारदर्शिता लाने, लाल फीताशाही से निपटने, भ्रष्टाचार से लड़ने और अंततः गरीब और नगर के बीच ताकत के बदलते रिश्तों के बारे में है। मल की राजनीति फाइल में से एक और किस्सा। स्पार्क के पास वैधानिक

नोटिस आया इस आरोप के साथ की उत्तर मुंबई के एक शौचालय संकुल की परियोजना में स्पार्क देरी करके उसे अटका रहा है। बड़े ही अचंभे की बात थी – क्योंकि स्थानीय राजनैतिक विरोध और धमकियों के रहते स्पार्क काम पूरा करने की भरपूर कोशिश कर रहा था। सच है की निर्माण का काम कुछ समय के लिये रुका था, पर वो इसलिये की दो अलग अलग बार स्थानीय पुलिस अफसर स्पार्क द्वारा लगाये गये मजदूरों को वहां से पकड़ कर ले गये और एक बार तो शौचालय ठेकेदार को भी ले गये, वो भी बिना कोई कारण बताये। सच्चाई सामने आई तो पता चला की एक स्थानीय राजनेता 'अपनी' झोंपड़पट्टी में एम. पी. फंड की सहायता से शौचालय संकुल बनाना चाहता था – जबकि गठबंधन के समुदाय आधारित शौचालय इस तरह के संरक्षण तरीके के बिलकुल विपरीत हैं। स्पार्क ने मुंबई उच्च न्यायालय में उत्तर दिया और बाद में जब

फिर से मजदूरों पर उटपटांग अभियोग लगाकर उन्हें बंद किया गया तो उन्होंने मुंबई पुलिस कमिश्नर से संपर्क किया। विभिन्न हितों को संतुलित करना नगरपालिका के लिये भी कठिन है। आखिर नगरपालिका ने झोंपड़पट्टी में शौचालय बनाने की अनुमती वापस ले ली। ऐसे हैं समुदाय शौचालय निर्माण के निरंतर चलते घेरदार और घुमावदार मोड़।



Uphill Task!

THIS is a story when building a toilet was literally an uphill task! Says Amol Parab from Mumbai who is building a toilet on Parbati hill in Pune, "Bringing toilet construction material to this site was a real problem. The lanes are narrow and the route uphill, so no trucks can reach these areas. So we had to pay labourers to carry the material up to the toilet site."

This case wised up the SPARC team to include additional expenditure incurred on 'lead' in their budget – 'lead' meaning an amount to pay for carrying construction material to inaccessible locations. Meanwhile, work continues apace on the project.

चढ़ाई चढना

ये कहानी है उस शौचालय की जो पहाड़ चढ़ कर बनाया गया। पर्वती पहाड़ी पर शौचालय बनाने वाले मुंबई का अमोल परब कहता है, " इस साइट पर संडास निर्माण का सामान लाना बड़ी समस्या थी। गलिया संकड़ी हैं और चढ़ाई है इसलिये इस इलाके में कोई ट्रक नहीं आ सकता। इसलिये हमें संडास की साइट तक माल ले जाने के लिये मजदूरों को पैसे देने पड़े थे।" इस केस ने स्पार्क दल को सिखाया की अपने बजेट में 'लीड' के लिये अतिरिक्त खर्च का प्रावधान रखें – 'लीड' का मतलब मुश्किल जगहों पर माल ढोने के लिये दिया गया पैसा। इस बीच में परियोजना पर काम जोरों से चालू है।



Ah'bad Gets its First Community Toilets



WITH the Ahmedabad Municipality finally coming through on its promise to

permit the Ahmedabad Slum Dwellers Federation to build the city's first two community toilet blocks, construction took off with a bang. It's been a very exciting time for everyone, with the ASDF already set to push the authorities to scale up the project citywide.

When NSDF and Mahila Milan leaders from Mumbai visited Ahmedabad in 2003, they helped the ASDF identify priority locations for the toilet blocks: One was Shankar Bhavani, a strongly federated area where an old municipal toilet served as an open garbage dump. Another was Nagori Kabarasthan, where the community toilet was in complete disrepair and had to be demolished and re-built.

Since this second slum hosts the main federation centre, leaders felt it was an important location to launch such an initiative. This toilet is now in the final stages of construction.



The Ahmedabad Fed finally got permission to build the city's first two community toilet blocks. Construction took off with a bang. Below, Fed members visit Mumbai

अहमदाबाद संगठन को आखिर शहर के पहले दो समुदाय शौचालय संकुल बनाने की अनुमति मिल गयी। निर्माण का काम जोरों से चालू है। नीचे, संगठन के सदस्य मुंबई आये।



अहमदाबाद को पहले समुदाय शौचालय मिले

अहमदाबाद नगर पालिका ने आखिर अपना वादा पूरा किया कि वो अहमदाबाद झोंपड़पट्टीवासी संगठन को शहर के पहले दो शौचालय संकुल बनाने देगी। निर्माण का काम जोरों से चालू है। सभी के लिये बड़ा उत्साहवर्धक समय था। और एन.एस.डी.एफ. तो जोर देने को तैयार है कि प्राधिकरण इस परियोजना को पूरे शहर में लागू करे। 2003 में जब मुंबई के एन.एस.डी.एफ. और महिला मिलन के नेता अहमदाबाद आये, शौचालय संकुलों के लिये प्राथमिक जगहों की पहचान करने में उन्होंने ए.एस.डी.एफ. की मदद की। एक थी शंकर भवानी, काफी संगठित इलाका जहां एक पुराना पालिका संडास खुला कचरा घर बन चुका था। दूसरी थी नागोरी कब्रिस्तान जहां समुदाय संडास बिलकुल बेकार पडा था और उसे तोड़ कर ही वापस बनाया जा सकता था। क्यों की इस दूसरी झोंपड़पट्टी में ही मुख्य संगठन केंद्र है, नेताओं को लगा की ऐसे काम के लिये यह एक महत्वपूर्ण जगह थी। यह संडास अब निर्माण के अंतिम चरण में है।



Why is Sanitation Like Cinderella?

In development discussions, the issues of water and sanitation are always clubbed together. What ends up happening however is that the scarcity of clean water becomes a focus, while the debate on lack of sanitation ends up as a fight between technical experts on the best way to manage and treat waste. Sanitation, in other words, gets the stepsisterly or Cinderella treatment.

For women living in slums and on the pavements, sanitation is, of course, the first priority. Without access to toilets, they are forced to defecate in the open, preferably under the cover of darkness. Often they don't eat or drink anything all day because of the fear of having to go to the toilet. Many suffer from severe health and emotional problems since, for them, answering nature's most basic call is a daily humiliation.

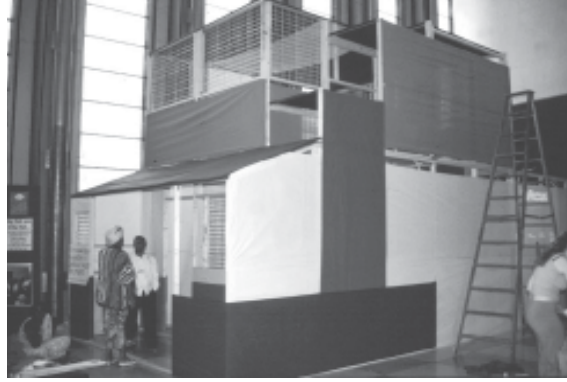
Even when very senior and highly committed development experts discuss the issue, sanitation is only seen as an 'environmental hazard'. And thus for the poor living in third world cities, their aspirations for a clean and secure habitat is relegated to a sub-set of an environmental goal – rather than being recognised as a key goal in itself.

The reality is that lack of adequate water and sanitation flow from the lack of equitable governance. As the Alliance points out, although the urban poor do face a serious water crisis, there's always a better chance of getting water – whether by stealing, exchanging, paying or fighting for it.

The case of sanitation is very different. Slum dwellers simply cannot access sanitation without institutional help. Over the past two decades, the Alliance's effort therefore has been to mobilise communities to voice their demand for sanitation. The community toilet block model which it advocates is designed by women from pavements and places maintenance in the hands of organised slum communities. This model is currently being implemented right across the country.

शौचालय सिंडरेला के जैसे क्यों है।

विकास चर्चाओं में, पानी और स्वच्छता के मुद्दे हमेशा साथ में डाल दिये जाते हैं। लेकिन अंत में होता यह है की साफ पानी की कमी पर ध्यान केंद्रित हो जाता है जब कि संडास की कमी की चर्चा मल के प्रबंध और निरूपण के विषय में तकनीकी विशेषज्ञों की लड़ाई बन कर रह जाती है। दूसरे शब्दों में स्वच्छता को सौतेला या सिंडरैला व्यवहार मिलता है। झोंपड़पट्टियों और फुटपाथ पर रहने वाली महिलाओं के लिये तो स्वच्छता ही सबसे बड़ी प्राथमिकता है। जब शौचालय नहीं मिलते उन्हें



Models of a slum house and toilet were set up in the UN lobby by SDI when the Millennium Development Goals were announced in 2000.

झोंपड़पट्टी और शौचालय के मॉडल एस.डी.आय. द्वारा यू.एन. की लॉबी में लगाये गये जब 2000 में मिलेनियम विकास लक्ष्यों की घोषणा की गयी।

जबरन खुले में और अधिकतर अंधेरे में संडास जाना पड़ता है। वे कई बार पूरे दिन कुछ खाती पीती नहीं हैं क्योंकि डर लगता है की संडास के लिये जाना पड़ेगा। कड़ियों को काफी शारीरिक और मानसिक समस्याएँ हो जाती हैं क्यों की उनके लिये प्रकृति की सबसे बुनियादी आवश्यकता रोज की शर्मिंदगी का कारण है। जब बहुत वरिष्ठ और प्रतिबद्ध विकास विशेषज्ञ भी इस मुद्दे की चर्चा करते हैं, स्वच्छता केवल 'पर्यावरण को खतरे' के रूप में देखी जाती है। और इसीलिये तीसरी दुनिया के शहरों में रहने वाले गरीबों की साफ सुथरे सुरक्षित घर में रहने की आशा सिर्फ पर्यावरण लक्ष्य का एक उप-खण्ड बना दी जाती है – बनिस्पत इसके कि उसे अपने आप में एक मुख्य लक्ष्य माना

जाये। वास्तविकता यह है की पानी और स्वच्छता की कमी समाधानकारक राज्य की कमी से है। जैसे की गठबंधन बताता है, हालांकि शहरी गरीबों के सामने पानी की गंभीर समस्या है, पानी मिलने का अवसर फिर भी मिल जाता है – चाहे चोरी से, अदला-बदली से, पैसे दे कर या लड़ कर। स्वच्छता की बात बहुत अलग है। झोंपड़पट्टीवासी स्वच्छता तक संस्थागत सहायता के बिना नहीं पहुंच सकते। इसीलिये पिछले दो दशकों में कोशिश रही है की वे समुदायों को गतिशील करें जिससे की वो स्वच्छता के लिये अपनी आवाज उठायें। जिस समुदाय शौचालय का गठबंधन समर्थन करता है उसका डिजाइन फुटपाथ की महिलाओं ने किया है और उसका रखरखाव समुदाय के हाथों में होता है। आज की तारीख में यह मॉडल पूरे देश में बनाया जा रहा है।



IT WAS probably the most unusual exhibit ever put on show in the lobby of the UN in New York. People flocked in large numbers. ..to see the model of a third-world community toilet block set up by Slum/Shack Dwellers International in year 2000. The occasion was the announcement of the Millennium Development Goals (MDG) for poverty eradication.

न्यू यॉर्क स्थित यू.एन. की लॉबी में लगायी गयी यह प्रदर्शनी शायद वहां लगने वाली प्रदर्शनियों में से सबसे अनूठी थी। लोग बड़ी संख्या में आये-वर्ष 2000 में स्लम/शैक ड्वैलर्स इंटरनेशनल द्वारा बनाये गये तीसरी दुनिया के समुदाय शौचालय संकुल के मॉडल को देखने। मौका था, गरीबी उन्मूलन के लिये मिलेनियम विकास लक्ष्यों की घोषणा।

Alliance's Jockin briefs UN Chief Kofi Annan

जोकिन ने रहमत का परिचय यू.एन. मुख्य सचिव कोफ़ी अन्नान से करवाया।

